बरेली, रविवार
27 जुलाई, 2025
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
पृष्ठ 16+4+4=24

दैनिक जागरण

PAGE NO.V: BOTTOM

रिद्धिमा में सहेजी भारतीय संगीत के दुर्लभ वाद्य यंत्रों की विरासत

रिद्धिमा के इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम में रखा वीणा • सौ. रिद्धिमा

रिद्धिमा के इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम में रखे सहेजे हुए सितार • सौ. रिद्धिमा

अशोक आर्य • जागरण

बरेली : क्या आपने रावण हत्था, गुलगुबा, अलगोजा, सुरबहार, दिलरुबा, गोपीचंद का नाम सुना है। नहीं... यह किसी व्यक्ति, स्थान व फिल्म के नाम नहीं हैं। यह वह दुर्लभ वाद्य यंत्र हैं, जिनके बिना संगीत की कोई महफिल नहीं जमती थी, लेकिन वर्तमान संगीत में प्रचलन से बाहर हो स्मृति से भी लोप हो गए। आज ज्यादातर लोग इनका नाम नहीं जानते। इनमें आज की पीढ़ी के संगीतकार भी शामिल हैं। इन वाद्य यंत्रों को बजाना तो बहुत दूर की बात, देखकर पहचाना और नाम बता पाना भी सभी के लिए संभव नहीं। संगीत प्रेमियों और युवा पीढ़ी को अपने गौरवशाली संगीत इतिहास के इन दुर्लभ वाद्य यंत्रों से परिचित कराने और सहेजने के लिए एसआरएमएस ट्रस्ट ने पहल की है। इसके लिए श्रीराम मूर्ति स्मारक रिद्धिमा में संग्रहालय बनाया गया है। स्टेडियम रोड पर स्थित रिद्धिमा के इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम में देश के कोने-कोने से दो सौ से ज्यादा दुर्लभ वाद्य यंत्रों लाकर संरक्षित किए गए हैं। इतने दुर्लभ वाद्य यंत्र शायद ही देश के किसी संग्रहालय में एक साथ संरक्षित हों। खास बात है कि इन सभी का दुरुस्त होना और छेड़ने पर अपनी कर्णप्रिय धुनों से सामने वालों को हैपी हार्मोन से भर देना। इस इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम से रिद्धिमा देश का इकलौता ऐसा संगीत संस्थान है, जहां इतने दुर्लभ वाद्य यंत्रों के संग्रहालय के साथ गायन, वादन, फाइन आर्ट्स, कथक, भरतनाट्यम, फोटोग्राफी और अभिनय की शिक्षा दी जाती है। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ (छत्तीसगढ़) से मान्यता हासिल इस संस्थान में छह माह का सर्टिफिकेट, एक वर्ष का एडवांस सर्टिफिकेट, दो वर्ष का डिप्लोमा और तीन वर्ष का एडवांस डिप्लोमा प्रदान किया जा रहा है। वर्ष 2021 में तीन सितंबर को एसआरएमएस ट्रस्ट के सचिव आदित्य मूर्ति ने वाद्य यंत्र संग्रहालय का पर्दा हटाया था।

उनका कहना है कि हमारे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को विश्व भर में धूम है। सभी देशों में हमारे वाद्य यंत्रों को सराहा जाता है। दो सौ से ज्यादा हमारे वाद्ययंत्र अलग-अलग देशों में भिन्न भिन्न नामों से जाने जाते हैं, लेकिन संरक्षण न होने से हमारे ही देश में अधिकांश वाद्ययंत्र प्रचलन से बाहर हो गए। इनमें से ज्यादातर तो लुप्त हो गए या लुप्त होने की कगार पर हैं। एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक व चेयरमैन देव मूर्ति ने इन्हें संरक्षित करने का संकल्प लिया और रिद्धिमा में इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम स्थापित किया।

जानकारी देते एसआरएमएस ट्रस्ट के सचिव आदित्य मूर्ति •

- 200 से ज्यादा दुर्लभ वाद्य यंत्रों को सहेजने वाला इकलौता संग्रहालय जहां मिलती है संगीत की शिक्षा
- देश के कोने-कोने से मंगाए लुप्त प्राय वाद्य यंत्र, पाश्चात्य संगीत के वाद्य यंत्र भी देख सकेंगे

कुछ लोक वाद्य यंत्र

- सारिंदा (गुजरात और राजस्थान)
- रावण हत्था (गुजरात व राजस्थान)
- गुबगुबा (पश्चिम बंगाल)
- कश्मीरी सारंगी
- कश्मीरी सितार

कुछ शास्त्रीय वाद्य यंत्र

रुद्र वीणा : यह सबसे प्राचीन और लगभग विलुप्त वाद्य यंत्र है। इसे संगीत की ध्रुपद शैली में बजाया जाता है।

सरस्वती वीणा : इसका प्रयोग दक्षिण भारत में ज्यादा किया जाता है, लेकिन उत्तर में यह इतना लोकप्रिय नहीं है।

विचित्र वीणा : वीणा का प्रयोग ध्रुपद गायन शैली के साथ किया जाता था।

मयूरी वीणा (तौसए ताऊस) : इसका प्रयोग अब गुरुद्वारा के शब्द कीर्तन तक सीमित हो गया है।

रिद्धिमा के इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम में सहेजे गए वाद्य यंत्र • सौ. रिद्धिमा

रिद्धिमा के इंस्ट्रूमेंट म्यूजियम में सहेजे गए ढोलक और तबला • सौ. रिद्धिमा